ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बरसात का मौसमः पशुपालन के लिए समस्या भी, वरदान भी

डॉ. एम. एस. मील

सहायक आचार्य, पशु पोषण विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर

भारत एक कृषि एवं पशुपालन प्रधान देश है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन किसानों की आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। वर्षा ऋतु (मानसून) कृषि एवं पशुपालन दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। मानसून की पहली बारिश जहां धरती को हरियाली से आच्छादित कर देती है, वहीं पशुओं के लिए भरपूर हरा चारा उपलब्ध कराती है। दूसरी ओर यही मौसम कई प्रकार की संक्रामक बीमारियों, परजीवी संक्रमण, चारे के खराब होने तथा पशु प्रबंधन संबंधी अनेक चुनौतियां भी लेकर आता है। इसलिए बरसात का मौसम पशुपालकों के लिए ''समस्या भी है और वरदान भी।'' यदि पशुपालक इस मौसम में वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाएं तो वे समस्याओं से बचते हुए अधिक उत्पादन और बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

बरसात का मौसमः पशुपालन के लिए वरदान

1. हरे चारे की भरपूर उपलब्धता

बरसात का सबसे बड़ा लाभ हरे चारे की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता है। वर्षा के कारण प्राकृतिक चारागाह, खेतों की मेड़ें तथा खाली भूमि पर विभिन्न प्रकार की पौष्टिक घासें स्वतः उग जाती हैं।

हरे चारे के प्रमुख लाभ-

- दूध उत्पादन में वृद्धि
- पाचन क्षमता में सुधार
- शरीर को आवश्यक विटामिन एवं खनिजों की पूर्ति
- पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि
- गर्भधारण एवं प्रजनन क्षमता में सुधार
- संतुलित एवं कम लागत वाला पोषण

2. चारे की लागत में कमी

बरसात के मौसम में किसान स्वयं खेतों से हरा चारा काटकर पशुओं को खिला सकते हैं। इससे महंगे सूखे चारे एवं दाने पर निर्भरता कम होती है और पशुपालन की लागत घटती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

3. दूध उत्पादन में वृद्धि

जब पशुओं को पर्याप्त मात्रा में ताजा एवं पौष्टिक हरा चारा मिलता है, तब-

- दुग्ध उत्पादन बढ़ता है।
- दूध की गुणवत्ता बेहतर होती है।
- दूध में वसा एवं एस. न. एफ. प्रतिशत में सुधार होता है।

4. पशुओं की शारीरिक वृद्धि

बछड़े, बछियां, मेमने तथा बच्चों की वृद्धि दर इस मौसम में सामान्यतः अधिक होती है क्योंकि उन्हें पर्याप्त पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं।

5. चारागाहों का पुनर्जीवन

बरसात प्राकृतिक चारागाहों के विकास का सर्वोत्तम समय है। यदि इस दौरान नियंत्रित चराई की जाए तो पूरे वर्ष के लिए गुणवत्तापूर्ण चारा उपलब्ध रह सकता है।

6. साइलेज एवं हे बनाने का सर्वोत्तम समय

बरसात में उपलब्ध अतिरिक्त हरे चारे को वैज्ञानिक विधि से संरक्षित किया जा सकता है।

साइलेज के लाभ

- पूरे वर्ष पौष्टिक चारा उपलब्ध रहता है।
- सूखे के समय चारे की कमी नहीं होती।
- दूध उत्पादन में निरंतरता बनी रहती है।
- चारे की बर्बादी कम होती है।

7. जल स्रोतों की उपलब्धता

तालाब, कुएं एवं जलाशय भर जाने से पशुओं के लिए पेयजल की उपलब्धता बढ़ जाती है।

बरसात का मौसमः पशुपालकों के लिए समस्याएं

जितना यह मौसम लाभदायक है, उतनी ही सावधानी भी आवश्यक है।

1. संक्रामक रोगों का प्रकोप

बरसात में वातावरण में नमी बढ़ने से बैक्टीरिया, वायरस एवं फफूंद तेजी से बढ़ते हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

इस मौसम में प्रमुख रोग-

- गलाघोटू
- ब्लैक क्वार्टर
- एंथ्रेक्स
- लंगड़ा बुखार
- खुरपका-मुंहपका
- ब्रूसेलोसिस का प्रसार
- बकरियों में पी पी आर
- भेड़ों में एंटरोटोक्सिमिया

समय पर टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है।

2. आंतरिक एवं बाह्य परजीवियों का संक्रमण

बरसात में जोंक, किलनी, जूं, मक्खियां, मच्छर और कृमि तेजी से बढ़ते हैं। इनसे खून की कमी, वजन घटना, दूध कम होना, कमजोरी और रोग फैलना जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

3. चारे में फफूंदी लगना

अधिक नमी के कारण सूखा चारा एवं दाना जल्दी खराब हो जाता है। फफूंदी वाले चारे में उत्पन्न माइकोटॉक्सिन पशुओं में दूध उत्पादन कम करना, गर्भपात, लीवर खराब होना, रोग प्रतिरोधक क्षमता कम करना और मृत्यु तक का कारण बन सकते हैं।

4. पशुशाला में गंदगी

बरसात में पशुशाला में कीचड़, पानी भरना और गोबर जमा होना आम समस्या है। इससे थनैला रोग, खुर रोग, त्वचा रोग और दुर्गंध बढ़ जाते हैं।

5. खुर संबंधी रोग

लगातार गीले फर्श पर रहने से थ्ववज तवज, खुर गलना और लंगड़ापन जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं।

6. मच्छरों एवं मक्खियों की वृद्धि

बरसात में मच्छरों की संख्या कई गुना बढ़ जाती है। ये अनेक रोग फैलाते हैं तथा पशुओं को बेचैन रखते हैं जिससे दूध कम होता है, भोजन कम खाते हैं और तनाव बढ़ता है।

7. बिजली एवं आकाशीय बिजली का खतरा

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

खुले स्थानों में चरते पशुओं पर बिजली गिरने की घटनाएं भी होती रहती हैं। बारिश के दौरान पशुओं को बड़े पेड़ों के नीचे नहीं बांधना चाहिए।

8. जलभराव

पशुशाला में पानी भरने से संक्रमण बढ़ता है, दुर्गंध आती है, मच्छर बढ़ते हैं और पशुओं का आराम कम हो जाता है।

9. हीट स्ट्रेस के बाद उमस

बारिश के बाद बढ़ी हुई आर्द्रता पशुओं के शरीर से गर्मी निकलने नहीं देती। परिणामस्वरूप दूध उत्पादन कम, भूख कम और प्रजनन क्षमता प्रभावित हो सकती है।

10. चारे का पोषण असंतुलन

अत्यधिक कोमल हरा चारा अकेले खिलाने से अफारा, दस्त और अपच हो सकते हैं। इसलिए हरे चारे के साथ सूखा चारा अवश्य देना चाहिए।

बरसात में पशुपालकों को अपनानी चाहिए ये सावधानियां

1. समय पर टीकाकरण करें

बरसात शुरू होने से पहले पशुओं का आवश्यक टीकाकरण अवश्य करवाएं।

2. कृमिनाशक दवा दें

हर 3-6 महीने पर पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशन कराएं।

3. पशुशाला सूखी रखें

ऊंचा फर्श बनाएं, पानी निकासी की उचित व्यवस्था रखें और प्रतिदिन सफाई करें।

4. स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराएं

गंदा पानी अनेक बीमारियों का कारण बनता है।

5. संतुलित आहार दें

हरे चारे के साथ सूखा चारा, दाना मिश्रण, मिनरल मिक्सचर और नमक भी अवश्य दें।

6. खराब चारा न खिलाएं

फफूंदी लगा, बदबूदार अथवा सड़ा हुआ चारा बिल्कुल न खिलाएं।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

7. मक्खी एवं मच्छर नियंत्रण करें

कीटनाशकों का सुरक्षित प्रयोग करें, पानी जमा न होने दें और नियमित सफाई रखें।

8. खुरों की देखभाल करें

सप्ताह में एक-दो बार खुर साफ करें और आवश्यकता अनुसार कीटाणुनाशक घोल (जैसे कॉपर सल्फेट या फॉर्मेलिन की अनुशंसित सांद्रता) में फुटबाथ कराएं।

9. अतिरिक्त हरे चारे का संरक्षण करें

बरसात में उपलब्ध अतिरिक्त चारे से साइलेज और हे बनाकर पूरे वर्ष के लिए सुरक्षित रखें।

10. नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराएं

यदि पशु खाना कम खाए, दूध कम दे, बुखार हो, दस्त हों और लंगड़ाकर चले तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

बरसात में पोषण संबंधी विशेष सुझाव

- हरा एवं सूखा चारा संतुलित मात्रा में दें।
- मिनरल मिक्सचर प्रतिदिन खिलाएं।
- नमक की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- साफ पानी हर समय उपलब्ध रहे।
- अधिक कोमल दलहनी चारा सीमित मात्रा में दें।
- धीरे-धीरे आहार परिवर्तन करें।
- चारे को काटकर खिलाना बेहतर रहता है।

बरसात को बनाएं अवसर

यदि पशुपालक वैज्ञानिक पशुपालन अपनाएं, पशुशाला साफ रखें, समय पर टीकाकरण कराएं, परजीवी नियंत्रण करें, चारा संरक्षित करें और संतुलित पोषण दें तो बरसात का मौसम पशुपालन की लाभप्रदता को कई गुना बढ़ा सकता है।

बरसात का मौसम वास्तव में पशुपालन के लिए ''दोहरी प्रकृति'' वाला मौसम है। एक ओर यह हरे चारे, पानी, बेहतर पोषण तथा पशुओं की वृद्धि का सुनहरा अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर संक्रामक रोगों, परजीवियों, गंदगी, चारे की खराबी और प्रबंधन संबंधी अनेक चुनौतियां भी सामने लाता है। इन चुनौतियों का समाधान वैज्ञानिक प्रबंधन, स्वच्छता, संतुलित पोषण, समय पर टीकाकरण, कृमिनाशन तथा चारा संरक्षण जैसी सरल लेकिन प्रभावी तकनीकों को अपनाकर किया जा सकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

जागरूक एवं प्रशिक्षित पशुपालक बरसात की संभावित समस्याओं को नियंत्रित करते हुए इस मौसम के प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। अतः यह कहना उचित होगा कि ''बरसात का मौसम पशुपालकों के लिए समस्या भी है और वरदान भी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका प्रबंधन कितनी वैज्ञानिक एवं सावधानीपूर्वक करते हैं।''